



## International Journal of Research in Academic World



Received: 03/November/2023

IJRAW: 2023; 2(12):01-04

Accepted: 01/December/2023

### रंग विज्ञान का जीवन में महत्व

\*<sup>1</sup>डॉ. रामस्वरूप साहू और <sup>2</sup>हेमन्त धवल

<sup>1</sup>प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, कुचामन, म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

<sup>2</sup>शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

#### सारांश

रंगों का भौतिक जीवन में विशेष महत्व है। रंग के बिना संसार की कल्पना करना भी मुश्किल है। रंगों का विशेष महत्व है इस संसार में तथा प्रत्येक रंग अपनी विशेषता के साथ कार्य करता है। रंग मानव के मानसिक स्तर को प्रभावित करता है। आजकल चिकित्सा विज्ञान में रंगों का उपयोग मानव के शारीरिक एवं मानसिक उपचार में भी हो रहा है। रंगों का विज्ञान अदभुत है जो संसार की प्रत्येक वस्तु को आकर्षक तथा समझने में सहायक करता है। प्रत्येक रंग की अपनी विशेषता है जो उन्हें दूसरे रंग से भिन्न बनाती है तथा अपना प्रभाव उत्पन्न कराती है। रंगों का चित्रकला में विशेष महत्व है जिसे प्रथक नहीं किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द:** संयोजी प्राथमिक रंग, वर्ण, प्राइमरी कलर, प्रिज्म, VIBGYOR तथा स्थूल वस्तु आदि।

#### प्रस्तावना

संसार की कल्पना रंग के अभाव में करना कितनी अजीब बात है लेकिन मूल रूप से इंद्रधनुष के सात रंगों को ही विभिन्न रंगों का जनक माना जाता है। ये सात रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी (VIBGYOR) है। लाल रंग को रक्त रंग भी कहते हैं, क्योंकि रक्त का रंग लाल होता है। यह शक्ति का प्रतीक है, जो जीने की इच्छाशक्ति और अभिलाषा को बढ़ाता है। यह प्रकाश का संयोजी प्राथमिक रंग है। यह रंग क्रोध और हिंसा को भी दर्शाता है। हरा रंग प्रकृति से जुड़ा है जो खुशहाली का प्रतीक है। हमारे जीवन में इसका बहुत महत्व है तथा यह प्राथमिक रंग है। हरे रंग में ऑक्सीजन, एल्यूमीनियम, क्रोमियम, सोडियम, कैल्शियम, निकिल आदि होते हैं। इस्लाम धर्म में इसे पवित्र रंग माना जाता है। नीला रंग आसमान का रंग है। यह विशालता का प्रतीक है। यह एक संयोजी प्राथमिक रंग है। इसका संपूरक रंग पीला है। गहरा नीला रंग अवसाद और निराशा को भी प्रकट करता है। पीला रंग खुशी और रंगीन मिजाजी को दर्शाता है। यह आत्मविश्वास बढ़ाता है। यह वैराग्य से भी संबंधित है तथा हिंदू धर्म में इसका विशेष महत्व है। विष्णु और कृष्ण को यह रंग प्रिय है। बसंत पंचमी तो इसी रंग से जुड़ा पर्व है। हल्का पीला रंग ईर्ष्या को दर्शाता है। सफेद रंग पवित्रता और निर्मलता का प्रतीक माना जाता है। यह शांति और सुरक्षा का भाव पैदा करता है। काला रंग रहस्य का प्रतीक है, यह बदलाव से रोकता है तथा यह नकारात्मकता को भी दर्शाता है। रंगों का चित्रकला में विशेष महत्व है। वर्तमान में रंगों का प्रयोग शारीरिक

एवं मानसिक रोगों के उपचार में चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में किया जाता है।

#### साहित्यावलोकन

एस.के. शर्मा तथा आर एस अग्रवाल द्वारा लिखित पुस्तक “रूपप्रद कला के मूलाधार” कला आधार भुत सिद्धान्तों पर प्रकाश डालती है। यह एक शानदार पुस्तक है। एडविन गार्जियास बोरिंग द्वारा लिखी पुस्तक “फाउंडेशन ऑफ साइकोलोजी” पुस्तक एक अच्छी पुस्तक है। एम ग्रेनेज द्वारा लिखित पुस्तक “द आर्ट कलर एंड डिजाइन” एक शानदार पुस्तक है जिसमें कला के आर्ट एंड डिजाइन पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। ‘विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला विधान’ चित्रकला तकनीक पर आचार्यों के विचारों को स्पष्ट किया गया है।

#### परिकल्पना

प्रस्तुत शोधपत्र में परिकल्पना की गयी है कि रंगों के विज्ञान के विषय को लेकर वर्तमान में रंगों के मानव जीवन में हो रहे प्रभाव को जानना। रंगों का कला में क्या महत्व है इस तथ्य को स्पष्ट करने की कोशिश की गयी।

#### शोध उद्देश्य

- हमारे शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार से है
- रंगों के महत्व जानना।
- रंग विज्ञान को समझना।

- iv). मानव जीवन में रंगों के प्रभाव को जानना।
- v). रंगों का कला में क्या महत्व है इस बारे में जानना।
- vi). रंगों के चिकित्सा क्षेत्र में हो रहे योगदान को समझना।

### शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से व्याख्यात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधि को प्रयोग में लाया गया है। शोध अध्ययन हेतु पुस्तक, मोनोग्राफ, पेंटिंग आदि का शोध उपकरणों के रूप में प्रयोग किया गया है। रंगों के जीवन में महत्व को दर्शाते हुए विवरण प्रस्तुत किया गया है।

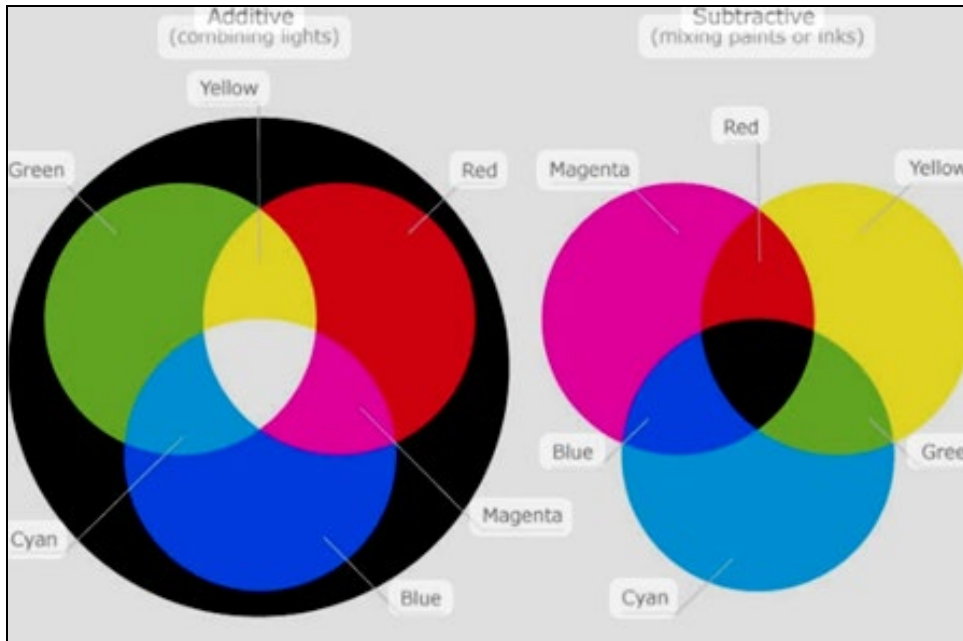
### रंग विज्ञान का भौतिक संसार में प्रभाव

मानव सभ्यता में रंगों का काफ़ी महत्व रहा है। हर सभ्यता ने रंगों को अपने तरीके से अपनाया। दुनिया में रंगों के इस्तेमाल को जानना भी बेहद दिलचस्प है। कई सभ्यताओं को उनके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रंगों की वजह से ही पहचाना गया। विक्टोरियन काल में ज्यादातर लोग काला या स्लेटी रंग इस्तेमाल करते थे। एक तरह से ये रंग इनकी पहचान थे। वैसे भी हर रंग के अपने सकारात्मक और नकारात्मक असर होते हैं।

'Colour is the property of light rather than of bodies.  
It is not an entity but a sensation conveyed to the  
mind through media of the eyes.'<sup>[1]</sup>

-F.A. Taylor

मानव जीवन में रंग का महत्वपूर्ण स्थान है। संसार में मौजूद प्रत्येक वस्तु कोई-न-कोई रंग लिये हुए है। वस्तुओं के धरातल में रंग होने के कारण ही वह हमें दिखाई देती है। धरातलों पर प्रकाश की मात्रा कम अथवा अधिक होने से एक ही रंग की वस्तुयें अलग-अलग दिखाई देती हैं। एक ही वस्तु बन्द कमरे में, धूप में तथा विभिन्न ऋतुओं में अथवा विभिन्न स्थानों पर प्रकाश की मात्रा तथा वातावरण के कारण रंग व्यवस्था की एक ही रंगत की होते हुए भी भिन्न दिखाई देगी। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक मानव तक ने सौन्दर्य के विकास में वर्ण का सहारा लिया है। कमरे की रंग व्यवस्था से लेकर बाग-बगीचों में फूल-पौधों की रंग योजना तक में उसने अपना हस्तक्षेप किया है क्योंकि रंगों का अपना एक प्रभाव होता है जो मानव की मानसिक भावनाओं को प्रभावित करता है। इस संसार में प्रकाश किरणों के द्वारा ही हम वस्तु के रंग को देखते हैं जो प्रकाश पुंज वस्तु पर पड़ता है, उसमें से वस्तु कुछ प्रकाश को वापिस कर देती है और कुछ को अपने में समा लेती है। जो प्रकाश वस्तु पुनः लौटाती है उसी में उसका वर्ण तथा अन्य गुण होते हैं और वह दर्शक के अक्षपटल पर पड़ते हैं। अक्षपटल में रोड्स व कोन्स नामक सूक्ष्म तन्तु ग्रन्थियां होती है जिनके द्वारा हम वस्तु से परावर्तित तरंगों द्वारा वस्तु का वर्ण अनुभव करते हैं। काले व सफेद की दृश्यानुभूति रोड्स के द्वारा तथा रंगों पीला, लाल, नील आदि की अनुभूति कोन्स के द्वारा मस्तिष्क को होती है।



चित्र 1: रंग चक्र

**रंग की तरंग गति:** रंग बोध में तरंग गति का अपना महत्व है। जितनी अधिक तरंगों की लम्बाई होती है उतनी ही उनकी चाल शीघ्र होती है। तरंगों की लम्बाई के कारण ही उनमें प्रखरता तथा ऊष्मा (Warmth) का भास होता है।<sup>[2]</sup>

**वर्ण की परिभाषा:** वर्ण प्रकाश का गुण है, कोई स्थूल वस्तु नहीं। इसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है बल्कि अक्षपटल द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाला एक प्रभाव है।<sup>[3]</sup>

**वर्ण के गुण:** वर्ण के तीन प्रधान गुण माने जाते हैं

i). **रंगत:** यह रंग की प्रकृति होती है, जैसे पीलापन, लालपन, नीलापन। यह वर्ण का वह गुण माना जाता है जिसकी सहायता से नीले, पीले तथा लाल के मध्यान्तर को दर्शक जान पाता है।

ii). **मान:** यह रंगत के हल्के गहरेपन का द्योतक है (Shade, Tint or Tone) जैसे गहरा लाल तथा हल्का लाल। यदि किसी रंगत में सफेद रंग मिला दिया जाय तो उस रंग का मान बढ़ जाता है और यदि काले के द्वारा मिश्रित किया जाय तब उसका मान कम हो जायेगा।

iii). **सघनता:** यह रंग की शुद्धता का परिचायक होता है। रंग में भूरापन अथवा धूमिलता मिलती है यह सघनता के द्वारा जाना जा सकता है जितना तीव्र अथवा प्रखर रंग होगा उसमें उतनी ही सघनता अथवा शुद्धता होगी। किसी भी वर्ण में तटस्थ अथवा उदासीन धूमिल रंग मिला देने से हम उसकी सघनता कम कर सकते हैं।

## रंगों का मानव मन पर प्रभाव

प्रत्येक रंग का मानव के मन पर भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। इनमें से कुछ रंगों के प्रभाव को हम जानेंगे।

- **काला रंग:** काला रंग विरोध, निराशा, मृत्यु, गहन अंधकार दुख को व्यक्त करते हुये बुराई एवं बुरे विचारों को जन्म देता है जो मानव जीवन के लिए हानिकारक होते हैं।
- **लाल रंग:** सब रंगों में प्रधान है। आकर्षक एवं उत्तेजक रंग है। यह मानव मस्तिष्क को शीघ्रता से अपनी ओर आकर्षित करता है। यह क्रोध, भय, खतरा जैसे भावों को जागृत कर साधान की चेतावनी भी प्रदान करता है।
- **पीला रंग:** चमकदार, घटकीला, स्वर्ण की भांति चमकीला होने के कारण प्रसन्नता, शीर्य, यश, प्रकाश, आदि नापों को प्रदर्शित करता है। स्नायुओं पर इस रंग का प्रभाव सर्वाधिक पढ़ने से सात्विक भाव तथा हमें पुष्प कर्मों की ओर प्रेरित करता है। राजसी, वैभय, सम्पन्नता एवं पूर्णता की भी झलक इस रंग के द्वारा देखी जा सकती है।
- **हरा रंग:** आंखों के लिए सुखकर, मस्तिष्क को गहराई से प्रभावित कर बौद्धिक क्षमता को जागरूक करता है। मानव मस्तिष्क को शीतल अनुभूति देने के कारण यह प्रकृति में सर्वत्र व्याप्त है।
- **नीला रंग:** सुख, अनुभूति, शान्ति और शीतलता का भाव उत्पन्न होने के साथ मन प्रसन्न करने वाला नीला रंग आकाश का रंग होने के कारण इससे भव्यता प्रकट होती है जहां हल्का नीला रंग खुशी का अनुभव तो वहीं इसके विपरीत शुद्ध गहरा नीला रंग रहस्यमयी, डरावने, वीभत्स वातावरण को दृष्टिगोचर करता है।
- **बैंगनी रंग:** लाल एवं नीले रंग के बराबर मिलने से बने बैंगनी रंग को राजसी रंग कहा गया है।
- **श्वेत रंग:** स्वतंत्रता, सत्यनिष्ठा, पवित्रता, सादगी के भाव को मान्यता दी गई है।

## चित्रकला में रंगों का महत्व

किसी भी चित्रकार के लिए रंग एक शक्तिशाली तथा महत्वपूर्ण कला तत्व होता है। रंगों को चित्रों में समायोजित करने का तरीका जटिल है क्योंकि रंग चित्र में अनुपात, भार, गति और लय को संतुलित करता है। किन्तु सार्थक स्वरूप की संरचना में रंग एक मजबूत तत्व बनकर सामने आता है। दर्शक की दृष्टि में रंग विशेष का महत्व है क्योंकि यह मानव के मन तथा मस्तिष्क में प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। 4 रंगों द्वारा विभिन्न प्रकार की रेखाओं रूप आकार का सृजन होता है। चित्रकला कला में कलाकार रेखांकन के माध्यम से मुख्या रूप से आकार का सृजन करता है लेकिन उसमें रंग प्राण-प्रतिष्ठा कर सुसज्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चित्रकला में एन्द्रियता का अनुभव रंगों के माध्यम से होता है। भारतीय कला परम्परा में चित्र संयोजन हेतु कई रंग सिद्धांत विशेष महत्व रखता है। प्राचीन काल में आचार्यों ने मन के स्वभाव के आधार निश्चित रंग माने हैं। भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में चार रंग यथा-सफ़ेद, लाल, पीला व नीला प्रमुख माने हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के चित्रसुत्रम अध्याय में पांच प्रकार के रंग का वर्णन किया गया है। यथा – श्वेत, पीत, विलोम कृष्ण तथा नीला।<sup>[5]</sup>

“मुलरंगाः स्मृताः पंच श्वेतः पीतो विलोमतः,  
कृष्णो नीलश्च राजेन्द्र शतशिडंतरतः स्मृताः।”

A considerable number of processes and materials can result in colour experiences. It has been discovered by artisans and craftsmen over the course of millennia, but until recently, the underlying causes remained mostly hidden. Colour materials (many used as colorants) are commonly thought to interact in similar ways with light,

but their apparent colour is in fact caused by a variety of specific physical phenomena. Nassau has identified and described a total of 15 causes of colour, with four dealing with geometrical and physical optics, and those remaining dealing with various involving electrons in atoms or molecules of materials and causing absorption or emission of light at selected wavebands (Nassau 2003). With the exceptions listed earlier, colour phenomena has one common factor Light.<sup>[6]</sup>



चित्र 2: पेरिस स्ट्रीट, विन्सेंट वां गॉग

## मानव के मानसिक एवं शारीरिक रोगों के इलाज में रंगों का महत्व

मेडिकल प्रेक्टिस के पितामाह कहे जाने वाले 11वीं शताब्दी के ईरान के चिकित्सा विशेषज्ञ हिप्पोक्रेट्स ने एक नया सिद्धांत पेश किया। उन्होंने रंगों का इस्तेमाल दवा के तौर पर किया और इसे इलाज के लिए बेहतर तरीका माना। उनके अनुसार सफ़ेद फूल और वॉयलेट फूल के अलग-अलग असर होते हैं। उन्होंने एक और सिद्धांत दिया, जिसके मुताबिक हर व्यक्ति की त्वचा के रंग से भी उसकी बीमारी का पता लगाया जा सकता है तथा रंगों के ज़रिये ही इसका इलाज भी संभव है। 15वीं शताब्दी में स्विट्जरलैंड के चिकित्सक वॉन होहेनहेम ने ह्यूमन स्टडी पर काफ़ी शोध किया, लेकिन उनके तरीके हमेशा विवादों में रहे क्योंकि उन्होंने ज़ख्म भरने के लिए रंगों का इस्तेमाल किया। 1672 में न्यूटन ने रंगों पर अपना पहला पत्र पेश किया जो काफ़ी विवादों में रहा। रंगों के विज्ञान पर काम करने वाले लोगों में जॉन्स वॉल्फगैंग वॉन गौथे भी शामिल थे जिन्होंने थ्योरी ऑफ कलर पेश की। आज भी कई चिकित्सक कलर थेरेपी को इलाज का अच्छा तरीका मानते हैं और इससे अनेक बीमारियों का उपचार भी करते हैं। आयुर्वेद चिकित्सा में भी रंगों का विशेष महत्व है। रंग चिकित्सा के मुताबिक शरीर में रंगों के असंतुलन के कारण ही बीमारियां पैदा होती हैं। रंगों का समायोजन ठीक करके बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। सृष्टि के अनेक उपहारों में रंग एक ऐसा बेहतरीन दिल लुभावना उपहार है, जिसके रहते जीवन आकर्षक बनता है। सोचें अगर जीवन में ये विविध रंगों का मेल नहीं होता तो जीवन कितना नीरस होता। रंग जीवन में रस भरता है। एक चित्रकार से पूछें कि रंगों का महत्व क्या है? एक कवि से पूछें कि क्या रंगों के बिना सृष्टि का

वर्णन संभव है? रंग केवल बाह्य सौंदर्य को ही नहीं निखारता बल्कि इसका प्रभाव मनुष्य के स्वभाव, शरीर, मन और स्वास्थ्य पर सीधा होता है। इसका हमारे जीवन से गहरा संबंध है। रंगों द्वारा मनुष्य का उपचार भी संभव है।

**कलर थेरेपी:** जिस तरह सूरज की तपिश और प्रकाश का प्रभाव हमारे शरीर पर होता है, उसी तरह सूर्य किरणों में जो सात रंग हैं उनका प्रभाव भी हमारे शरीर पर होता है। साथ ही रंगों में रोग निवारण करने की शक्ति भी होती है। आज-कल विदेशों में कलर थेरेपिस्ट उपचार के लिए रंगों का इस्तेमाल कर रहे हैं। भारत के दिल्ली शहर में कुछ कलर थेरेपिस्ट इस चिकित्सा का लाभ रूग्ण को दे रहे हैं। बच्चों से लेकर बड़ों तक को अलग-अलग रंगों की चाहत होती है। यह चाहत एक परिवार में भी सभी को अलग-अलग होती है। यह सिर्फ एक चाहत नहीं है ऐसा क्यों? इसके पीछे एक शास्त्र है। जिस रंग की कमी हमारे शरीर में होती है, शरीर बाहर से उस रंग की पूर्णता करता है।

प्राचीन भारत में रंगों की चिकित्सा (कलर थेरेपी) का संपूर्ण ज्ञान था। हमारे भारतीय कैलेंडर का प्रारंभ वसंत ऋतु के आगमन पर फागुन मास में निर्धारित किया गया था। फागुन मास में होली का रंगबिरंगा महत्त्वपूर्ण त्योहार मनाया जाता है, जिसमें भारतवासी प्राकृतिक रंग जैसे लाल, हरा, अबीर इत्यादि रंगों से पूर्ण शरीर सिंचित करते हैं। जिसका प्रभाव हमारे शरीर के प्रतिरोध तंत्र पर-पड़ता है और पूरे वर्ष भर मौसम परिवर्तन तथा अन्य कारणों से शरीर में रोगों के कीटाणुओं से संघर्ष करने की क्षमता उत्पन्न होती है। सृष्टि में मनुष्य के जीवन में सबसे ज्यादा हरे रंग का संबंध होता है, जैसे ऊँचे पेड़, हरी सब्जियाँ, हरियाली इत्यादि। हम वही रंग चुनते हैं जिस रंग की आवश्यकता हमारे शरीर को महसूस होती है। हम अलग-अलग माध्यमों द्वारा उस रंग का फायदा लेते हैं, जैसे फर्निचर, दीवार का रंग, बेडशीट, हमारे कपड़े इत्यादि।

**कलर थेरेपी के मानव स्वास्थ्य पर फायदे:** हम विभिन्न रंगों द्वारा विविध बीमारियों का उपचार किस प्रकार कर सकते हैं, यह नीचे बताया गया है।

- **हरा रंग:** शरीर से विषैले पदार्थ बाहर निकालना, उच्च रक्तचाप, बवासीर, त्वचा रोग, बद्धकोष्ठता इत्यादि में हरे रंग का इस्तेमाल लाभदायक होता है।
- **लाल रंग:** निम्न रक्तचाप, सुस्ती कम करना, जोड़ों और हड्डियों के विकार एवं दर्द इत्यादि।
- **औषध:** अपचन, निम्न रक्तचाप, दुर्बल मस्तिष्क, दमा, संस्तुति आदि।
- **पीला:** पेट की परेशानी, मलेरिया, गैस, हृदय रोग, मधुमेह, त्वचा रोग, श्वेतकुष्ठ आदि।
- **नीला:** नीला रंग ठंडक प्रदान करता है। सिरदर्द, अर्धशिश, दमा, उच्च रक्तचाप व तनाव दूर करने में उपयोगी है।

### रंगों की अन्य विशेषताएं

- **हरा रंग:** समन्वय, सहिष्णुता, दयालुता की भावना बढ़ाता है।
- **रायल ब्लू:** एकता, निष्ठा व कर्तव्य परायणता के भाव जागृत कराता है।
- **भूरा:** आत्मीयता, निष्पक्षता व मिट्टी से उठकर आसमान को छूने का सामर्थ्य पैदा करता है। शक्ति, स्फूर्ति, उत्तेजना, निश्चय, क्रोध व विचारों को पुष्ट करता है।
- **नारंगी:** अहंकार, महत्वाकांक्षा, सृजनशीलता में वृद्धि करता है।
- **पीला:** बुद्धिमत्ता व अभिव्यक्ति की स्पष्टता को बढ़ाता है।
- **गुलाबी:** शक्ति, आत्मसम्मान और रसिकता की भावना को बढ़ाता है।
- **सफेद:** शांति व पवित्रता का द्योतक है परंतु पाश्चात्य संस्कृति में यह उत्सव, पवित्रता तथा उल्लास का द्योतक है।
- **काला:** एकाकी पन व समभाव को बढ़ाता है।

- **नीला:** आपसी विश्वास व आत्मिक शांति को बढ़ाता है।

इस प्रकार आप अपने व्यक्तित्व में जिस गुण को लाना चाहें, उस रंग को अपनाएँ। फिर देखिए किस प्रकार आपके व्यक्तित्व में अवर्णनीय परिवर्तन आता है। रंगों को सूझबूझ के साथ अपनाएं ताकि आपका जीवन सही मायने में रंगों से भर जाए।



चित्र 3: रंग चिकित्सा का एक दृश्य

### रंग चिकित्सा की तकनीक

रंग चिकित्सा की प्रमुखतः दो तकनीकें हैं प्रथम तकनीक दृष्टि के माध्यम से उपचार किया जाता है। किसी विशेष रंग को इस उम्मीद से देखना की ये आपके शरीर में वांछित प्रतिक्रिया करेगा। दूसरी तकनीक है शरीर के कुछ हिस्सों में सीधे रंग को प्रतिबिंबित करके उपचार करना।<sup>17</sup>

### निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पेपर को तैयार करने में हमने 3-4 महीने समय लिया है। विभिन्न प्रकार की साइट तथा पुस्तकों माध्यम से हमने इस शोध में खोज कार्य को जारी रखा है। रंगों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। जीवन के विभिन्न भावों को रंगों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। प्रकृति में मौजूद प्रत्येक रंग का हमारे जीवन में किसी ना किसी प्रकार से प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में कई मानसिक रोगों के इलाज में रंग विज्ञान का प्रयोग किया जा रहा है। प्रत्येक रंग को ध्यान से देखने पर ये हमारे मन विशेष प्रकार के भाव को उत्पन्न करते हैं। कला में रंगों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि भौतिक संसार में रंगों का महत्व है रंग बिना संसार की कल्पना करना संभवतः मुश्किल है।

### संदर्भ

1. अग्रवाल, एस. के. शर्मा, आर.ए. अग्रवाल-रूपप्रद कला के मूलाधार, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1998, 25
2. बोरिंग, एडविन गार्जियस, फाउंडेशन ऑफ साइकोलोजी, अमेरिका, 1953, सिक्स प्रिंटिंग, 276-278
3. अग्रवाल, एस. के. शर्मा, आर.ए. अग्रवाल-रूपप्रद कला के मूलाधार, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1998, 26
4. ग्रेनेज, एम.-द आर्ट कलर एंड डिजाइन, न्यू यार्क, 1951, 280
5. अग्रवाल, वीणा-विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला विधान, दिल्ली, 1989, 20
6. Tomar, Vandana-“Color Theory in Art” research paper, SSRG-IJHS, Volume-2, 2015, 3
7. अवोवोरियाले, टोकेटेमु.-रंग थेरेपी के प्रकार, तकनीक और लाभ, वैरी वेळ माईड, 2023, [www.verywellmind.com](http://www.verywellmind.com)